ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department of- History - Subsidiary
08 - 05 - 2020 B.A I - [2019-20]
Dr. Satyajeet Sarang - Notes

[5] मगध राज्य का उत्कर्ष
हर्यक वंश [544 ई० पू० - 412 ई० पू०]

★ सोलह महाजनपदों में से एक मगध का एक साम्राज्य के रूप में आविर्भाव हर्यक वंश शासन के साथ हुआ।

बिम्बिसार इस वंश [हर्यक वंश] का प्रथम शक्तिशाली शासक [544 - 492 ई० पू०] था। उसे मगध - साम्राज्य की महत्ता का वास्तविक संस्थापक भी माना जाता है।

★ बिम्बिसार अंग राज्य को जीतकर उसे मगध साम्राज्य में मिलाया तथा अपने पुत्र अजातशत्रु को वहाँ का शासक नियुक्त किया।
मगध राज्य की आरम्भिक राजधानी गिरिव्रज [राजगृह] थी।

मत्स्य पुराण में बिम्बिसार को क्षेत्रौजस तथा जैन साहित्य में श्रेणिक कहा गया है।

बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को अवन्ति नरेश चण्ड प्रद्योत के राज्य में चिकित्सार्थ भेजा था।

उसकी प्रथम पत्नी कौशल देवी कौशल राज प्रसेनजित की बहन थी तथा दूसरी लिच्छवि राजकुमारी चेल्लना थी।
अजातशत्रु [492-460 ई० पू०] अपने पिता बिम्बिसार की हत्या करके अजातशत्रु [कुणिक] मगध का शासक बना।

अपनी साम्राज्यवादी नीति के अन्तर्गत उसने काशी तथा वज्जि संघ को एक लम्बे संघर्ष के बाद मगध साम्राज्य में मिला लिया। उसके मंत्री वस्सकार द्वारा वैशाली के लिच्छवियों में फूट डालने के कारण ही अजात शत्रु को वज्जि संघ पर विजय प्राप्त हुई। इस युद्ध में अजात शत्रु ने रथमसल तथा महाशिलाकंटक नामक नये हथियारों का प्रयोग किया।
लिच्छवियों के आक्रमण से सुरक्षा के सुरक्षा के लिए अजातशत्रु ने अपनी राजधानी राजगृह में सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण कराया।
उसके शासन काल के आठवें वर्ष में बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ। बुद्ध के अवशेषों पर उसने राजगृह में स्तूप का निर्माण कराया।
पुराणों के अनुसार 28 वर्ष तथा बौद्ध साक्ष्यों के अनुसार 32 वर्ष तक अजातशत्रु ने शासन किया।
→ अंतिम समय में अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदायिन द्वारा कर दी गई।

* उदायिन [461-445 ई०पू०] पुराणों एवं जैन ग्रन्थों के अनुसार गंगा तथा सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र [कुसुमपुरा] नामक नगर की स्थापना की तथा उसे अपनी राजधानी बनाई।
* उदायिन जैन धर्मावलम्बी था।

इस वंश के अंतिम नागदशक या दर्शक को शिशुनाग नामक एक अमात्य ने पदच्युत कर मगध की गद्दी पर अधिकार कर लिया और 'शिशुनाग' नामक एक नये वंश की नींव डाली।

शिशुनाग वंश [412-344 ई०पू०]

[1.] शिशुनाग ने अवन्ति तथा वत्स राज्य पर अधिकार कर उसे मगध साम्राज्य में मिल लिया। इस समय मगध साम्राज्य के अन्तर्गत बंगाल से लेकर मालवा तक का भू-भाग सम्मिलित था। शिशुनाग ने वज्जियों के उपर कठोर नियंत्रण रखने के लिए पाटलिपुत्र के अतिरिक्त वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।

[2.] कालाशोक [उपनाम : काकर्ण] [394 ई० पू० से 366 ई० पू]

इसने अपनी राजधानी पुनः पाटलिपुत्र में स्थानांतरित कर लिया। इस समय के बाद पाटलिपुत्र में ही मगध की राजधानी रही। कालाशोक के शासनकाल में वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ।